रिश्तों की डोर

काव्य संग्रह

श्रीमति उमा सुहाने

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कर्मों की पूजा की और किया कर्तव्यों का अभिनंदन।
परिश्रम को ध्येय बनाया और खिलाया यह गुलशन ।।
यादों की खुश्बू से महकता रहेगा यह चमन ।
आपको हमारा शत्-शत् नमन ।।

स्मृति शेष- श्री रामदास जी सुहाने - श्रीमती रुक्मणीबाई सुहाने, (ससुराल पक्ष)

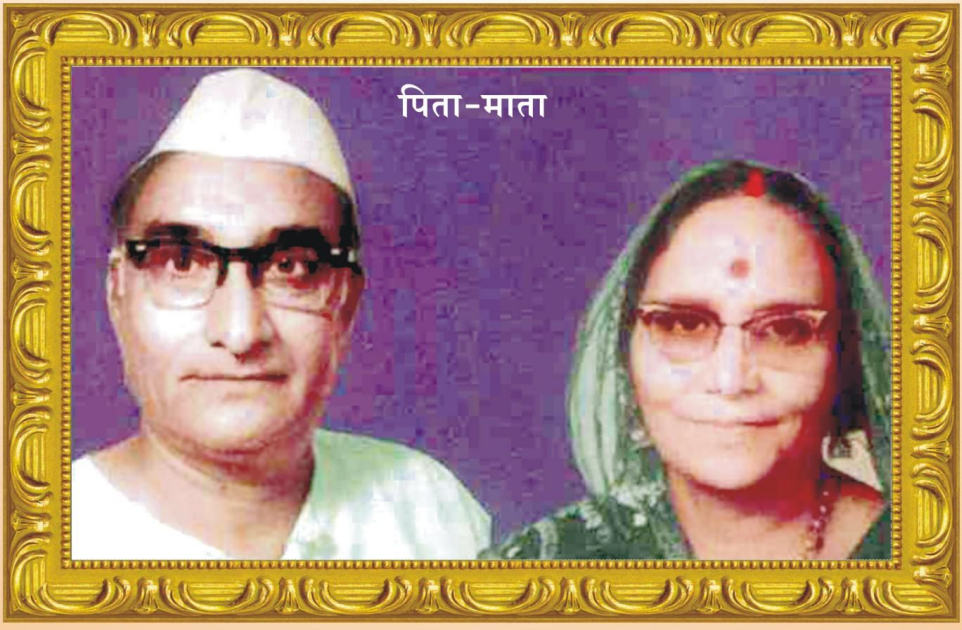

स्मृति शेष- श्री चंद्रिका प्रसाद जी मोर - श्रीमती सरोज मोर, कटनी (मायका पक्ष)

रिश्तों की डोर

काव्य संग्रह

श्रीमती उमा सुहाने

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - ' 978-93-5372-060-5'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाश- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **उमा सुहाने**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

RISTON KE DOR BY UMA SUHANE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेशित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाशाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण

स्व. श्री रामदास जी सुहाने

स्व. श्रीमती रूक्मणी बाई सुहाने

एवं

स्व. श्री चंद्रिका प्रसाद जी मोर

स्व. श्रीमती सरोज मोर

को

सादर समर्पित

रिश्तों की डोर

जीवन के रंग मंच में, अच्छे बुरे का बज रहा ढोल ।
रिश्तों में प्यार बनाने, मीठी बातों का रस घोल ।।

मेरी बात

मै अपनी यह पुस्तक उन सभी पावन रिश्तों को समर्पित करती हूँ, जिन्होंने मेरे माता, पिता, सास, ससुर, पति, भाई, बहिन, बेटा, बेटी, बहू, दामाद, और नाती-नातिन के रूप में खूबसूरत पुष्प बनकर मेरे जीवन को महकाया है। सुन्दर चमकदार मुक्ता बनकर प्रेम की डोर में बंधकर मेरे कंठ को सुशोभित किया है क्योंकि इसी में वाणी का निवास होता है जो शब्दों में पिरोकर प्रत्येक संबंध को उद्घोशित करके मूर्त रूप देती है ।

प्रत्येक रिश्ते की अपनी महत्ता और अपना स्वरूप है जो प्रेम धागे में बंधे हुए हैं । मैंने इसलिए ही पुस्तक का नाम 'रिश्तों की डोर' रखा है । यदि कहीं भी इस प्रेम डोर में गांठ पड़ गयी तो कभी भी एक पुष्प या एक मुक्ता दूसरे के निकट नहीं आ सकेगा और जीवन रूपी माला एक होते हुए भी टूटी हुई सी प्रतीत होगी ।

मैं कामना करती हूँ कि रिश्तों की डोर सदैव विविध रूपों में प्रेम से बंधी रहे किन्तु अफसोस इस बात का है कि वर्तमान समय में रिश्ते रिसा (नाराज) रहें हैं। छोटी-छोटी बातों को दिल से लगा लेते हैं। बड़ों को सम्मान देने में लोगों का 'ईगों' (आत्म सम्मान) आड़े आ जाता है ।

अंततः मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे, सभी रिश्तों को प्रेम के अटूट बंधन में बांधकर प्रत्येक मनुष्य के जीवन को सराबोर व सुखमय कर दें।

मेरा निवेदन है कि आप सभी पाठकगण मेरी पुस्तक का पठन, अध्ययन करके, उचित समीक्षा करके मुझे अनुग्रहित करें । मैं आपके सुझावों की प्रतीक्षा करूंगी ।

धन्यवाद ।

रचनाकार

श्रीमती उमा सुहाने

रायपुर (छत्तीसगढ़)

अनुक्रमणिका

1.	रिश्तों में मेल	7
2.	रिश्तों में प्यार	8

3.	रिश्ता प्रभु से	9
4.	रिश्ता गुरूदेव से	10
5.	नारी	11
6.	नारी के नौ रूप	12
7.	वृद्धों का मान	13
8.	परिवार	14
9.	माँ	15
10.	पिता	16
11.	माता-पिता	17
12.	सास-ससुर से रिश्ता	18
13.	पति-पत्नी	19
14.	बेटा	19
15.	बेटी	20
16.	भाई-बहन	21-22
17.	बेमेल रिश्ता	23
18.	बिखरते रिश्ते	24
19.	पराये होते रिश्ते	25
20.	सास बहू से रिश्ता	26
21.	दामाद से रिश्ता	27
22.	समधी-समधन का रिश्ता	27
23.	मित्र से रिश्ता	28
24.	शुभकामनायें और अपेक्षायें, नन्हें मुन्नों को	29

	आशीषें, जन्मदिन पर शुभकामनाऐं,	
25.	विवाह पर शुभकामनायें	30
26.	रिश्ते तब भी और रिश्ते अब भी	31-32

रिश्तों में मेल

रिश्तों में मेल बनाने हो ऐसा फंडा,
जैसे नभ में रहते सूरज और चंदा ।

कभी ऊश्ण भाव से रिश्ते कायम रहते,
कभी शीतल किरणें छिटक, संजोए रहते ।

प्रेम पल्लवित जहाँ, रिश्तों में मिठान,
शांति समृद्धि वहाँ, प्रभु कृपा का वास ।

रिश्तों की डोर थामने, मन सुदृढ़ बनाएं,
मलिन विचार हटा, हृदय निर्मलता लाएं ।

प्यार से दिलों में राजकर बनाओ पहचान,
ज्ञान ध्यान विज्ञान की बातें सुनो इंसान ।

रिश्तों में प्यार

प्यार प्रभु का दिया उपहार ।
बांटो बढ़े, इसके रूप हजार ।।

जब हो मात पिता से प्यार,
कर सम्मान सेवा में तैयार ।
जब हो भाई बहन से प्यार,
निर्मल मन रक्षा का इकरार ।
प्यार प्रभु का दिया उपहार ।।

जब हो पति पत्नी में प्यार,
हो समर्पण, बसे घर संसार ।
जब हो बेटा बेटी से प्यार,
सुख देने अभिलाश अपार ।
प्यार प्रभु का दिया उपहार ।।

जब हो गुरूदेव से प्यार,
मिटे मन का सारा अंधकार ।
जब हो परजनों से प्यार,
करते उनसे मीठा व्यवहार ।
प्यार प्रभु का दिया उपहार ।

जब सृष्टि के हर जीवन से प्यार,
होवे संत हृदय साकार ।
जब हो स्वदेश से प्यार,
मर मिटने को रहे तैयार ।
प्यार प्रभु का दिया उपहार ।।

जब हो दीन दुखी से प्यार,
करते दिल से उनका उपकार ।
जब हो अतिथि से प्यार
करते हुदय से सत्कार ।
प्यार प्रभु का दिया उपहार ।।

जब हो सत्संग से प्यार
मिल जाए सन्मारग द्वार ।
जब हो पार ब्रम्ह से प्यार
भव सागर से हो जाए पार ।
प्यार प्रभु का दिया उपहार ।।

रिश्ता प्रभु से

रिश्ता जोड़ा हरि से, आयी मै उनके द्वार,
प्रेम निभाना ऐसा प्रभु, करना भव से पार।

लड्डू गोपाल जी देख, लाल सा आवे भाव,
श्रद्धा से पूजाकर, उनकी मिटते हृदय के घाव।

मुरली सुन, मनोहर छबि देख, होते प्यासे नैन,
दर्शनबिन मैं बावरी, हरि कैसे मिले आये न चैन।

प्रेम भक्ति रिश्ते से शबरी अहिल्या तारी,
भवबंधन मेरा छूटे, मुझे भी आस तुम्हारी।

सुना ऐसा माया विलग, हो लगाते प्रभु ध्यान,
तब हरि कृपा बरसती, हो जाता उनका कल्यान।

रिश्ता- गुरूदेव से

गुरूवर मुझको जीने की राह बताते,
मेरे हिय मंदिर में ज्ञान दीप जलाते।
पहली गुरू मां घर का सारा ज्ञान देती,
दूजे गुरू शिक्षक, पुस्तक, शाला ज्ञान देते।
फिर जीवन संभले जग की नजर बताते,
गुरूवर मुझे हमेशा जीने की राह बताते।।
यह जीवन बगिया सदा महकती रहे,
सुंदर रंगबिरंगे फूलों से सजती रहे।
इस बाग के माली, गुरू ही बन जाते,
गुरूवर मुझको जीने की राह बताते।।
घिरें नहीं कभी उलझन की दीवारों में,
फंसे नहीं कभी हम संकट के कांटों में।
इनकी तीखी चुभन से गुरू हमें बचाते,
गुरूवर मुझको जीने की राह बताते।।
यदि ठोकर खाएं पांव पड़ जाएं छाले,
और जब बंद हो जाएं अकल के ताले।
आखिर गुरू ही ज्ञान की चाबी लाते,
गुरूवर मुझको जीने की राह बताते।।
गहरा पानी देख कर जब डर जागे,
या जग नदिया में नैया डूबन लागे।
तब गुरू ही पतवार चलाने आते,
गुरूवर मुझको जीने की राह बताते।।
ज्ञान इनका पाने बैठे हम झोली फैलाए,
चुन चुन मोती डालें मन मेरा भर जाएं।
फिर हृदय शिखा में गुरू का रूप समाए,
गुरूवर मुझको जीने की राह बताते।।

नारी

नारी नर की सृजनिका, नारी से नर पहचान,
नारी अनारी न समझना, नारी नर की शान।

नारी में वह भक्ति, करते सब देव प्रणाम,
माँ यशुदा श्याम, कौशल्या खिलाए राम।

नारी ऐसी पावन गंगा, करते जब स्नान,
तन मन निर्मल करे, हो सदा कल्यान।

नारी में वह भक्ति, करते सब देव प्रणाम,
माँ यशुदा श्याम, कौशल्या खिलाए राम।

नारी सुंदर सौम्य सरल, सहज भावों की खान,
लेने दो जन्म बेटी को, न करो अपमान।
नारी नही ंतो नर कहॉ, कहॉ जन्म स्थान।
नारी नर की शोभा है, हो उसका गुणगान।।

नारी लक्ष्मी नारी दुर्गा, वह जगजननी जान।
भू मंडलल की सीमा का, भरा अनूठा ज्ञान।।

नारी में हर शक्ति समाहित शीश झुकाऍ जहान।
अपने कर्तव्यों की निश्ठा में, वह हो जाती कुर्बान।।

नारी भूत भविष्य है, नारी ही वर्तमान,
युग युग की कहानी वह, बनाये देश महान।

नारी के नौ रूप

विधि की निर्माणी दुनिया में, नारी के रूप अनेक।
हर रूपों की रोशन करती, तू क्षमता उसकी देख।।
नारी अनारी न समझो, उसमें समाहित कई हैं शक्ति।
दो परिवारों की आन रख, प्यार खुशी बनाये रखती।।
पहला रूप बेटी बनकर, मात पिता की गोद भरती,
अमित प्यार पिता का पाकर, माँ की ममता में रहती।
अपनी प्रेम चपल खुशबू से, पीहर बगिया महकाती।
इठलाती मुस्काती सीख संवर में, वह घड़ी बिताती।।
दूजा रूप बहना बन, भाई बहन संग खेल खिलाती।
भाई के कर राखी बांध, प्रभु से उनकी कुशल मनाती।।
तीजा रूप बहू बन सास ससुर, बड़ो की सेवा धर्म अपनाती।
मीठी बोली का रसपान करा, सद्व्यवहारों से मन हरषाती।।
चौथा रूप पत्नी बन पति चरणों में समर्पित, जीवन धन्य मनाती।
उनके सुख दुख में बन सहभागिनी, प्रेम की ज्योत जलाती।।
पांचवा रूप भाभी बन, देवर नंद संग यथा फर्ज निभाती।
उनके कवि खट्टी मीठी बातों में, अपना दिल बहलाती।।
छठवां रूप माँ, का त्याग तप ज्वाला में, खुद को झुलसाती।
अच्छे संस्कारों की नीव डाल, उनका उज्जवल भविष्य बनाती।।
सातवां रूप बच्चों की शादी कर, सास बनकर आती।
घर बिखरने न पाए अपने अनुभव, रीति रिवाज बताती।।
आठवां रूप दादी नानी बन, बच्चों को कहानी गीत सुनाती।
उनकी भोली छोटी नोंक झोंक को, मीठे वचनों से सुलझाती।।
नवां रूप स्वजन परिजन बीच, सहायक बन आती।
जीवन के हर मोड़ पर, अपनी आदर्श छवि दिखलाती।।
सुधड़ नारी अपने हर रूपों को, शक्तिमय सुंदर सौम्य बनाती,
इस गरिमा को कायम करने, उत्तम रूपों की पहचान कराती।।

वृद्धों का मान

वृद्धों का कर लो सम्मान ।
इनसे रहती घर की शान ।।

ये हम पर रक्षा छत्र लगाते ।
मंगल हो प्रभु से, कर जोड़ बनाते ।।
जिस घर होता वृद्धों का मान,
उस घर रहता देवों का स्थान ।

वृद्धों का कर लो सम्मान ।
इनसे रहती घर की शान ।।

देखो खोजो वृद्धों में है वृद्धि,
मान की वृद्धि ज्ञान की वृद्धि ।
इनमें समायी जीवन समृद्धि,
इनके सेवा से आये रिद्धि सिद्धि ।।

वृद्धों का कर लो सम्मान ।
इनसे रहती घर की शान ।

कल के बच्च हुये आज जवान ।
कल होंगे वृद्ध, फिर बने मेहमान ।
उपेक्षा न करना वृद्धों की इंसान ।
इनसे ही है हम सबकी पहचान ।।

वृद्धों का कर लो सम्मान ।
इनसे रहती घर की शान ।

परिवार

जी भर खुशियाँ बिखराना, प्रभु इस परिवार में ।
लगे नहीं नजर किसी की, मायामय संसार में ।।

फूलों सी मुस्कान भरी हो, भौरे सा नितगान हो,
कांटों रहित बिछौना हो, हरे वृक्षों की छांव हो ।
शांतिमय पथ में चलना आए, सबके विचार में,
जी भर खुशियाँ बिखराना, प्रभु इस परिवार में ।।

भाई बहन में कटुता न हो, हरदम प्यार ही प्यार हो,
हृदय में निर्मल जल धारा, सुख समृद्धि बौछार हो ।
सुमन एकता दे देना, सब आए तेरे दरबार में,
जी भर खुशियाँ बिखराना, प्रभु इस परिवार में ।।

बड़ों का यथाविधि मान रहे, छोटों का भी सम्मान हो,
सद्गुणी बने सभी, क्रिया कलापों में एक पहचान हो ।
रिश्ते नातों का ध्यान रहे, आपस में प्रेम व्यवहार में,
जी भर खुशियाँ बिखराना, प्रभु इस परिवार में ।।

माँ

देकर जन्म बच्चे को, रक्षित करना हर माँ की कहानी है ।
तन, मन, धन न्यौछावर कर, वो ममता प्यार की दानी है ।।
शीत, ग्रीष्म के झोंकों से, गीलेपन की अहसासों से,
रोते बच्चे की मनभाषा को, माँ ने ही तो पहचानी है ।
देकर जन्म.....
भूखे प्यासे कंठों से, मौन रहे इन ओंठों से,
ठुमके रहे तन की थिरकन को, माँ ने ही तो जानी है
देकर जन्म.....
खुद भूखी प्यासी रहकर, थकी आँखों से नींद भुलाकर,
अपनी त्याग समर्पण की झोली माँ ने ही तो तानी है ।
देकर जन्म.....
उम्र होती जब पढ़ने की, संस्कारों को गढ़ने की,
उन्नत पथ पर लाने की मन में, मॉ ने ही तो ठानी है ।
देकर जन्म.....
ब्याह रचाकर खुशियाँ देने, जग में जीवन नैया खेने,
उसका घर संसार बसाने की, माँ ने ही तो मानी है ।
देकर जन्म.....
हर कदम पर वह हर घड़ी, मुश्किल तम पर आन खड़ी
बच्चों के सुखदीप पर पतंगा बन, मिटना माँ ने ही तो जानी है ।
देकर जन्म.....

पिता

पिता लोरी नहीं सुनाते
प्यार नहीं वे जता पाते ।
उठाने बोझ कंधे सुदृढ़ बनाते,
निज सुध बच्चों में भुला जाते ।
पिता हैं बुनियाद का पत्थर,
खुशियां लाने पिसते दफ्तर ।
बच्चों के लिए देते कुर्बानी,
हिम्मत उनकी किसने जानी ।
पिता बच्चों का विश्वास,
मां धरती तो वे आकाश ।
खुशियां अपनी सबको बॉटें,
दुख दर्द परिवार के काटें ।
पिता ही हैं वो अगम समंदर,
सब बहाव लेते अपने अंदर ।
मां छाया बच्चे फल फूल,
पिता वृक्ष खड़े जड़ मूल ।
पिता ही हैं घर का संबल,
उनकी छांव से जीवन सरल ।
पिता सुखों का अक्षय भंडार
नमन उनको शत-शत बार ।

मात-पिता

मात पिता को शीश नवाकर ले लो आशीर्वाद,
व्यर्थ की बातों में रहकर, करना नहीं विवाद ।

जन्म दिया पाला पोसा, हर पल रखा ध्यान,
पढा लिखाकर योग्य बनाया, बना दिया इंसान ।

माता पिता का न अपमान करो, न नजरों से दूर,
अंत घड़ी में बच्चों, न करना तुम उनके सपने चूर ।

मातपिता की त्यागतप पूंजी से सदा खुशी भरी रहेगी,
उनकी पुन्य छाया से, सुखो की बगिया महक उठेगी ।

इनके शुभ आषीशों से, ही झोली सदा भरी रहेगी,
जिस दिशा कदम बढ़ाओगे, सफलता वरण करेगी ।

सास-ससुर से रिश्ता

सास-ससुर हैं ससुराल की शान ।
मात-पिता तुल्य करना सम्मान ।।

बाबुल का अंगना जब बेटी ने छोड़ा ।
ससुराल सास ससुर से नाता जोड़ा ।।

जन्म संस्कार मात-पिता से पाया ।
सास ससुर ने सारा जीवन महकाया ।।

मात-पिता से बढ़कर है यह रिश्ता ।
वे है सदा बहुओं के लिये फरिश्ता ।।

भूमि देवो का शत्-शत् पगवंदन ।
तन, मन, धन से स्वीकारें वे अभिनंदन ।।

पति-पत्नी

जैसे दिया में सजी हो बाती ।
पति पत्नी इक दूजे के साथी ।।
जैसे पानी बीच मछली रानी ।
वैसी इन दोनों की प्रेम कहानी ।।

जैसे उड़ती पतंग और डोर ।
ऐसे दोनों का नाचे मन मोर ।।
जैसे नभ में चांद सितारे ।
दोनों समर्पित देख नजारे ।।

पति पत्नी से बनता परिवार ।
प्रेम से जीवन में आए बहार ।।
इनका रिश्ता है अनमोल ।
बजती रहे प्यार की ढोल ।।

बेटा

मां की आंखों का तारा बेटा,
पिता के सपने साकार करे बेटा
कुल का दीपक है प्यारा बेटा
आगे वंश चलायेगा बेटा

मात पिता का रखता ध्यान
पूरे करता उनके अरमान
बेटा है घर परिवार की शान
परम्पराओं का रखता ध्यान

बेटा है तो खुला घर द्वार
चारों दिशा से आये बहार
घर बाहर देता मीठा व्यवहार
सबको मिलती खुशी अपार

मात पिता का बने सहारा
सदा रखे घर में उजियारा
सद्गुणी बेटा लगता प्यारा
सुख दुख बांटे राजदुलारा

बेटी

कौन कहता है बेटी नहीं भली,
बेटी तो फूलों सी नाजुक कली।।

बेटा से एक ही घर परिवार चले,
बेटी दो घर परिवार लेकर चली।। कौन ....

बेटे का अपने ही घर में गहरा नाता,
बेटी दो घर का नाता जोड़ चली।। कौन ....

बेटा अपने ही कुल का दीपक,
बेटी से दो कुल की ज्योत जली।। कौन ....

बेटा एक घर से पाए अच्छा ज्ञान,
बेटी दो संस्कारों को लेकर ढली।। कौन ....

बेटा अपने घर परिवार की हिम्मत,
बेटी दो घर का साहस भर चली।। कौन ....

बेटा एक घर का है धीर वीर,
बेटी दो घर की पीर उठा चली।। कौन ....

बेटे से अपने ही घर मे नाम बढ़ा,
बेटी की दो घर में कहानी चली।। कौन ....

भाई-बहन

भाई-भाई

भाई जैसा जग में न कोई मीत
प्यार भरे सागर सी आपस में प्रीत ।
विपत घड़ी में न देता जब कोई साथ,
रूठा भाई भी बढ़ा लेता अपना हाथ ।

भाई-भाई ने एक कोख मे लीं हिलोरें,
फिर क्यों तीखी बातों से दिल तोडे ।
भाई प्रेम से राखी का फर्ज निभाता,
खुशियां हों जीवन में राह बताता ।

कहते सब, भाई- भाई में प्रेम जहां,
रह न पाते दुख के बादल कभी वहां ।
भाई भाई में हो कैसा निर्मल प्यार
दिखाया जग में राम कृष्ण ने अपार ।

बहन-बहन

बहन, की प्यारी बहना दो दिल में एक कड़ी,
मुसीबत के पल में इक दूजे को आन खड़ी ।
आपस की झंझावातों को दिल पर नहीं लगाती
बचपन से जीवन भर अंतर्मन से प्यार जताती ।

बहन, बगिया की सुंदर तितली सी होती,
जो रंग बिरंगे पंख फैलाकर खुशियां देती ।
गंगा यमुना सी बहन खुश नसीबों को ही मिलती,
जो सद्भावों को ले दिल में प्यार संजोए रहती।

भाई-बहन

भाई देख बहन हृदय से फूली नहीं समाती,
कर में रक्षा डोर बांध उसका कुशल मनाती ।
रूठे भाई का भी बहन नित ही भला मनाती
भाई का सुख देख बहन सदा मन में हरषाती ।

नभ में चमके जैसे चांद सितारा,
जग में भाई बहन का रिश्ता प्यारा ।
बहना पतंग सी उड़ती आकाश निहारे,
भाई रक्षा डोर पकड़ कर पतंग संभाले ।

कृष्ण ने बहन द्रोपदी की लाज बचाई,
ऐसा ही प्रेम रखे हर बहन का भाई ।
स्नेह बंधन राखी भाई बहन का त्यौहार,
प्रीत हो रिश्तों में, रहे सदा ऐसा व्यवहार ।

बेमेल रिश्ता

जोड़ी है बेमेल पर भरी जीवन में मिठास,
क्योंकि रिश्ता निभाने की है गहरी आस।

इनको देखो नैनों के झरोखों से,
फिर हँस बोलो अपने ओठों से।

मेल फीमेल जोड़ी बनी है अटपटी,
पर जहाँ संतोष वहां नहीं खटपटी।

कोई का तन लंबा कोई का छोटा,
पर मन का रिश्ता नहीं है खोटा।

मोटी पत्नी के दुबले हैं साजन,
बूढ़े जनाब की नई नवेली दुल्हन।

कोई अनपढ़ तो कोई पढे लिखे,
आपस में मेल की मिशाल दिखे।

काले गोरे की जोड़ी अजब निराली
पर मेल रिश्तों में, प्यार न जाए खाली।

बिखरते रिश्ते

बदलती सीमाओं में रिश्ते भी रिसा रहे।
अपनी नजदीकी पहचान को भी गंवा रहे।।

रिश्ते का सरोवर रिसते रिसते रीत रहा,
सूखी मिट्टी की दरारों को अब देख रहा।

टूटते बिखरते अकेले ही बिन्दु में समा रहे
बदलती सीमाओं में रिष्ते भी रिजा रहे।।

रक्त का रिश्ता भी अब विरक्त हो रहा,
जरूरत नहीं महकते रिश्ते नाते खो रहा।

मामा, मौसी, चाचा, बुआ, रिश्ते मिट रहे,
बदलती सीमाओं में रिश्ते भी रिसा रहे।।

रिश्तों की भीड़ में रिश्ते, अब गुम हो रहे,
पहचान का नकाब उठा, विखंडन को बढ़ रहे।

आत्मिक स्नेह सेतु के अनमोल रिश्ते बिखर रहे,
बदलती सीमाओं में रिश्ते रिसा रहे।।
अपनी नजदीकी पहचान को भी गंवा रहे।।

बेटी बिदाई : पराये होते रिश्ते

पिया घर अब तेरा हुआ, पिता घर परदेस
मृगनयनी बेटी चली, बदल अपना परिवेश

स्वर्णमहल सा घर हो तेरा, उज्ज्वल सपने साकार
कल्प वृक्ष हो आंगन में, मधुर मिले व्यवहार

सबके हृदय कमल में, नील कमल सी हो सुरभित
उनके असीम प्यार की छांव में, सदो रहो पुलकित

चमके माथे की बिंदिया, जब तक सूरज चांद रहे,
सजी रहे प्यारी बिटिया, जब तक गंगाधार बहे ।

मायुशी हो न कभी, चुभे न कोई कांटा जीवन रथ में,
हर पल संग हो प्रीतम, नवरंगी खुशियों के रथ में ।

यश वैभव सुख सौभाग्य किसी क्षण न हो दूर,
मातपिता की शुभकामना, मांग भरे सिन्दूर ।

सास-बहु का रिश्ता

जब बेटी जाती ससुराल, नया रूप बहू रानी कहलाती ।
नये घर में, नये परिवेश में वह भी लक्ष्मी सा मान पाती ।।

ससुराल की देहरी पग रखती, होती खुशियों की झंकार ।
लेकर अमर सुहाग बहूरानी, रोशन करती घरद्वार, संसार ।।

बेटे का पालन पोषण कर जब सुयोग्य, सुशिक्षित बनाते ।
तब मिलता सौभाग्य बहू पाने का सब मंगल साज सजाते ।।

सास-ससुर के अरमानों का वह सुंदरतम रूप दिखाती ।
अपने सद्व्यवहारों, संस्कारों से, सबका ही मन हरषाती ।।

बंशबेल को बहू बढ़ाती, घर आंगन वह सुंदर फूल खिलाती ।
मीठी वाणी का रसपान कराकर, धर्म-कर्म, परम्परा अपनाती ।।

सास भी माँ बनकर, बहू से करती बेटी तुल्य मधुर व्यवहार ।
परस्पर प्रेम की डोर से बँधा रहे जीवन भर उनका परिवार ।।

बहू ही तो भाभी, चाची, ताई और फिर स्वयं माँ का रूप धरती ।
प्रेम, करूणा, त्याग की मूरत बन, दोनों कुल की लाज बचाती ।।

जहाँ सास-बहू के रिश्तों में, नहीं होती कोई तकरार ।
होते वहाँ हमेशा दोनों के सुनहरे सपने सच्चे साकार ।।

परिवार समाज की मान-मर्यादा बचाकर अपना फर्ज निभाती ।
अपने प्रिय गृह-मंदिर को स्वर्ग बनाकर प्रेम की ज्योत जलाती ।।

दामाद (जमाई राजा) का रिश्ता

घोड़ी चढ़कर जब आये द्वार जमाई राजा ।
संग में समधी-बाराती हैं लाये बैंड बाजा ।।
बेटी वाले तब अपना, धन्य भाग्य मनाते ।
शादी रचायी बेटी की, तब दामाद घर आते ।।
करके कन्यादान हम, बेटी उनके हाथ सौंप देते ।
सुख दुख की संगिनी बनाने, सात वचन वे लेते ।।
डोली में बैठाकर बेटी को हर मात-पिता हरशाते ।
रिश्तों में प्यार बढ़े हमेशा आशीष जमाई को देते ।।
जीवन भर स्वागत करते हैं मात-पिता और भाई ।
पावन करने पग रखें, ससुराल में जब जब जमाई ।।
अनेकों मेवा मिश्ठान्न सजाकर लाती सासो थाली ।
हंसी ठिठोली मजाक करने, आती सरहज साली ।।
प्यार-सत्कार पाकर दामाद, तब बेटे सम बन जाते ।
मान-सम्मान, प्रेम व्यवहार दे सुख दुख में साथ निभाते ।।

समधी-समधन

समधी-समधन के रिश्ता में बनी रहे मिठास ।
जैसे बेला गुलाब के फूलों में बनी रहे सुवास ।।
बेटा-बेटी ब्याह कर हम, समधी-समधन पाते ।
अन्जानों से रिश्ता जोड़कर, सुनहरे पल बिताते ।।
आपसी प्रेम व्यवहार में सदा मधुरता बनी रहे ।
मान अपमान की डोर दिल में न तनी रहे ।।
सुख दुःख में साथ रहे, विचारों में अलगाव रहे ।
प्यार प्रेम की ज्योत जले हृदय में सद्भाव जगे ।।

मित्र से रिश्ता

है मित्र का रिश्ता जग में बड़ा महान ।
जाति वंश धर्म का यह करे न ध्यान ।।

कृष्ण सुदामा सी मित्रता हो जहाँ ।
संकट के बादल रहते नहीं कभी वहाँ ।।

मित्र जैसा जग में न देखा कोई मीत ।
प्यार भरे सागर में जैसे मोती सीप ।।

सच्चा मित्र आग में भी शीतलता लाये ।
आंसू पोंछकर खुशी की राह दिखाये ।।

विपत घड़ी में वह अपना हाथ बढ़ाये ।
कांटों भरी राह में भी फूल बिछाये ।।

जीवन में पतझड़ हो तो लाये बहार ।
सदा करे मित्र से प्रेमपूर्ण मधुर व्यवहार ।।

सच्चे मित्र के मन में बहती निर्मल धारा ।
रक्त के रिश्तों से भी बढ़कर लगता प्यारा ।।

शुभकामनायें और अपेक्षायें
नन्हें - मुन्नों से रिश्ते - आशीषें

नन्हे मुन्ने प्यारे प्यारे,
हम सबकी नैनों के तारे ।
दादा दादी के बने सहारे ।
नाना-नानी के राजदुलारे ।।
सीखो प्यारी मीठी बानी,
करना नहीं कोई शैतानी ।
जैसे गुलाब से सुगंध महके,
नभ में जैसे सूरज चांद चमके ।
समुद्र की शीप में जैसे मोती दमके,
बेटा रहना परिवार की शान बनके ।
जुग जुग जियो हजारों साल,
बनी रहे शुभ-आशीषों की ढाल ।

जन्मदिन पर शुभकामना

जन्म दिन की शुभबेला पर, नवप्रकाश आया,
मंगलमय जीवन आपका, सदा हरिकृपा छाया।
जब तक पृथ्वी आकाश रहे, जन्म दिन आए बारंबार,
हर खुशियों से दामन भरा रहे, खुलें सुखों के द्वार।
जीवन बगिया की हर डाली में, फूलें गुलाब फूल,
बढती उन्नत राहों में हर कांटे भी बन जाएं धूल।
हर दिशा में हर घडी हो, सफलता का पद चुम्बन,
बेटा-बेटी मेरी विनती स्वीकार करें, कृपामयी रघुनंदन।
बदलते वर्ष की बहार में, आएं जग की खुशियां सारी,
सदा उज्जवल हो भविश्य तुम्हारा, ये शुभकामना हमारी।

विवाह पर शुभकामनायें

पूर्वजों की छत्रछाया में, हर्ष उल्लास बना रहे,
नव युगल के गृह आंगन में, कल्प वृक्ष लगा रहे ।

सुनहरी सुंदर शुभ बेला, आज खुशी ले आयी,
जुगल जोड़ी की मनोहर छबि सबके मन भायी ।

खुशियों के इस रंग मंच में, आज बाजे ढम ढम ढोल,
नये रिश्तों में प्यार बनाने, मीठी बातों का रस घोल ।

नव दंपत्ति के जीवन में, बजती रहे मंगल शहनाई,
शुभ सौभाग्य मिले हमेशा, हर्षित मन से दे रहे बधाई ।

जन्म दिवस और विवाह दिवस पर थाम रही रिश्तों की डोर,
सुख संपदा वैभव यश पाने में, न करना कभी इसे कमजोर ।

खिले फूलों की डाली से, चमन सदा महकता रहे,
प्रेम उमंग में दोनों का, भाग्य सितारा चमकता रहे ।

रिश्ते तब भी और रिश्ते अब भी

पहले भी थे रिश्ते-नाते और अब भी है रिश्ते-नाते।
अब औपचारिकता दिखलाते पहले प्रेम भाव निभाते।।

पहले दादा-दादी, चाचा-चाची, ताउ-ताई संग-संग रहते।
नित सम्मान बड़ों का होता, अरमान भी उनके पूरे होते।।

छोटों को मिलता स्नेह प्यार, इन पर न रहता कोई भार।
बाहर से जो मिलने आते, देते मान उन्हें भी आयु अनुसार।।

रिश्ते मजबूत बनाने त्यौहारों पर पत्र व्यवहार अपनाते।
पहले भी थे रिश्ते नाते और अब भी हैं रिश्तें-नाते।।१।।

पहले मौसा-मौसी बुआ-फूफा, बड़ों की सुनते प्यार डाँट।
कभी उनसे नाराज न होते और न लेते दिल पर कोई बात।।

अब उनकी बातें बुरी समझकर, कहते 'क्यों देते मुझे उपदेश'।
तेवर में लाकर, पहुँचाते हैं रूखा अब उनके हृदय का ठेस।।

ऐसी उलझी बातों से रिश्तों में मतभेद खड़े हो जाते।
पहले भी थे रिश्ते-नाते और अब भी है रिश्ते-नाते।।२।।

पहले संयुक्त परिवार बनाते, न एकल परिवार का रहता जोर।
अब अकेलेपन का बोझ उठाकर, वे होते स्वयं ही दिनरात बोर।।

घर में रौनक चहल-पहल बनाने, रखते हैं टी.बी. चेनल का शोर।
बच्चों को व्यवहार-संस्कार नही मिल पाते हो जाते हैं कमजोर।।

चतुर विवेकी तीखे व्यंग्यों से, मीठी बातों का रसपान कराते।
पहले भी थे रिश्ते-नाते, और अब भी है रिश्ते-नाते।।३।।

पहले तीज त्यौहारों पर सज सँवरकर, सबसे प्यार से मिलते।
एक दूजे की खट्टी-मीठी बातों का, रस मुस्कुराकर वे चखते।।

अब परम्पराओं को ठुकराकर, नहीं किसी की देहरी चढ़ते।
मोबाइल पर आये संदेशों को, ही फारवर्ड करके खुश होते।।

पर प्रेम की ज्योत जलाकर जो रिश्तों को कायम रख पाते।
सही अर्थों में मेल बनाकर रिश्ता-पथ रोशन कर जाते।।४।।

पहले तीन त्यौहारों पर सज संवरकर, सबसे प्यार से मिलते।
एक दूजे की खट्टी-मीठी बातों का रस मुस्कुराकर चखते।।५।।

अब परम्पराओं को ठुकराकर, नहीं किसी की देहरी चढते।
मोबाइल पर आये संदेशों को, यहॉ वहॉ फारवर्ड करके खुश होते।।६।।

पर प्रेम की ज्योत जलाकरजो रिश्तों को कायम रख पाते।
वही तब और अब में मेल बनाकर रिश्ता-पथ रोशन करवाते।।७।।

मैं और मेरे जीवनसाथी

श्री गोविंददास जी सुहाने - श्रीमती उमा सुहाने

मायका पक्ष

ससुराल पक्ष

व्यक्तित्व दर्पण

नाम : श्रीमती उमा सुहाने

जन्मतिथि : २४ दिसम्बर सन् १९५३ (जन्म स्थान-कटनी)

शिक्षा : बी.ए., आर्ट्स एण्ड क्राट डिप्लोमा ।

व्यवसाय : 'भगवती कला केन्द्र' की संचालिका

पारिवारिक पृष्ठभूमि :-

पिता-माता : स्मृति शेष श्री चन्द्रिका प्रसाद-सरोज मोर, कटनी

सास-ससुर : स्मृति शेष श्री रामदास जी सुहाने-श्रीमती रूकमणी

भाई-बहन : श्री कैलाशनाथ, शरदचंद्र मोर, डॉ. मनोरमा पिपरसानिया

बेटी-दामाद : श्रीमती अभिलाषा-प्रकाश सेठ

बेटा-बहू : श्री अभिषेक-ज्योति, आनंद-आभा, आशीष-स्नेहा

बगिया के फूल: शिवांश, दिव्यांश, आन्या, आदित्य, आन्शी, प्रनवी, शान्वी

साहित्य पृष्ठभूमि :-

संप्रति : स्वतंत्र अध्ययन लेखन, हिन्दी लेखिका संघ की आजीवन सदस्य, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविताओं, गीतों, लेखों का प्रकाशन, सांझा संग्रह में भी प्रकाशन ।

प्रकाशित एकल पुस्तक : श्री रामनाम दोहावाली, अंतर्ज्योर्ति

सम्मान : कला क्षेत्र में लगभग १५ सम्मान पत्र, अंतरा शब्द शक्ति साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान, हिन्दी लेखिका सम्मान आदि ।

पता : सुहाने भवन, श्री गोविंददास सुहाने, जनता होटल के पास, महावीर नगर, रायपुर (छ.ग.)

सम्पर्क : ९३०२६८२२९, ७८६९८०४६८०

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-060-5
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध